

# वैवाहिक बलात्कार सोच : एक बीमार मानसिकता



जब तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप जीवन और सामाजिक संबंधों के हर पहलू में पूरी दुनिया सतही हो गई है। सनातन संस्कृति अभी भी सभी त्योहारों, व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों में मौजूद है। सनातन संस्कृति प्राणियों में बंधन, प्रेम, मदद करने और अस्तित्व में विश्वास करती है और दृढ़ता से अभ्यास करती है।

शादी ऐसे ही प्यार और बंधन का एक उदाहरण है। यह किसी के जीवन में एक अनुबंध या मजबूर रिश्ता नहीं है, बल्कि जीवन के उतार-चढ़ाव के भी आत्माओं का बंधन है, अच्छा या बुरा, हर्षित या दुखद, सभी परिस्थितियों में प्यार और बंधन है।

यदि हम इसे मानसिक दृष्टि से भी देखें तो भी मन लगातार नई चीजों और लोगों की तलाश में रहता है। एक ही तरह के लोगों या चीजों के साथ बोरियत के कारण कई शादियां होती हैं या जब चाहें तब पार्टनर बदलते हैं, जो कई संस्कृतियों में एक सामान्य घटना है। क्या इसका मतलब यह है कि वे केवल महिलाओं को सेक्स ऑब्जेक्ट मानते हैं? किसी को अनुसंधान करने और इसे सार्वजनिक करने की आवश्यकता है। महिलाओं को प्रजनन भागीदार के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। प्रजनन केवल जीवन की निरंतरता के लिए है और परिवार में नए प्रवेशकों के साथ जीवन को और अधिक सार्थक बनाने के लिए है जो माता-पिता के प्यार का प्रतीक हैं। एक महिला न केवल जीवन का निर्माण करती है, बल्कि अपने समर्पण और कड़ी मेहनत से प्यार और परिवार से जुड़े होने से परिवार का निर्माण और विकास भी करती है।

सनातन संस्कृति में एक महिला को कभी भी यौन वस्तु के रूप में नहीं माना जाता है; बल्कि, उन्हें माँ लक्ष्मी (देवी) के रूप में माना जाता है, जो अपने प्यार और देखभाल के माध्यम से नए परिवार में गौरव लाती हैं। नतीजतन, उस समय के कुछ शासकों को छोड़कर, सनातन संस्कृति में 1000 वर्षों के बाद भी, एक व्यक्ति के कई विवाह और बदलते साथी अकल्पनीय हैं।

सनातन संस्कृति में पत्नी या पति के जीवन में सकारात्मक बदलाव और प्रेम के लिए कई चीजों का त्याग करने के कई उदाहरण मिलते हैं। हर समाज में अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं। कुछ बुरे लोग संस्कृति की अवहेलना करते हैं और घरेलू हिंसा में लिप्त होते हैं। घरेलू हिंसा कानूनों द्वारा इन

व्यक्तियों को उनके गलत कामों के लिए दंडित किया जाना चाहिए। उन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह विश्वास करना कि हर कोई अपने जीवन साथी के प्रति हिंसक है, एक बीमार मानसिकता है।

वैवाहिक बलात्कार के बारे में सोचना बेतुका है ; इस संबंध में एक कानून बनाने से विवाह प्रेम और देखभाल से रहित अनुबंध के रूप में रह जाएगा, जिससे रिश्ते सतही हो जाएंगे। वैवाहिक बलात्कार कानून विवाह बंधन के मूल को तोड़ देगा, एक संदेहपूर्ण रवैया विकसित करेगा, अहंकार सही और गलत के ज्ञान को नष्ट कर देगा, प्रेम अपने फायदे की सोच का कार्य बन जाएगा, विवाह अनुबंध की तरह प्रतीत होगा, यदि शर्तें पूरी होती हैं तो ठीक है या कानूनी कारवाई के लिए तैयार हो जाओ।

समाज को अपनी माताओं और बहनों के साथ दैनिक आधार पर बड़ी संख्या में होने वाले वास्तविक बलात्कारों को गंभीरता से लेना चाहिए। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस बात की चिंता होनी चाहिए कि किन मूल्यों को स्थापित किया जाना चाहिए और ऐसे राक्षसों को कड़ी सजा देने के लिए वर्तमान कानूनों का उपयोग कैसे किया जा सकता है। यदि नए, सख्त कानूनों की आवश्यकता है, तो सरकार और न्यायपालिका के माध्यम से उन्हें लागू करने के लिए समाज को एक साथ आना चाहिए।

क्या ये वे लोग हैं जो यूरोप और अमेरिका में कई भागीदारों में बदलाव के साथ-साथ एक विशिष्ट धर्म में कई विवाहों को अनदेखा कर वैवाहिक बलात्कार के मुद्दे को उठा रहे हैं? यदि हम इस मुद्दे की गहन जांच करते हैं, तो हम पाएंगे कि अवसाद, चिंता, आत्महत्या की प्रवृत्ति और सामाजिक और आर्थिक विनाश मुख्य रूप से इन बेकार संबंधों, एक से ज्यादा शादियां और गलत संस्कृति का परिणाम है। इन संस्कृतियों की महिलाओं की रक्षा के लिए गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है।

यह कानून एक महान रिश्ते और संस्कृति को नष्ट कर देगा, और इसका परिणाम पुरुषों और महिलाओं दोनों को भुगतना होगा। परिवारों के बीच मतभेदों को सुलझाएं ; यदि संबंध बहुत दूर तक खिंचे हुए हैं, तो न्यायिक हस्तक्षेप के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए हमारे पास कानून हैं।

बहुत से पाश्चात्य लोग विवाह के तरीके और सनातन संस्कृति में उल्लिखित सिद्धांतों में विश्वास करने और उनका पालन करने लगे हैं। इस महान संस्कृति को क्यों नष्ट किया जाए, जब दुनिया का अधिकांश हिस्सा पहले से ही टूटे हुए रिश्तों, अविश्वास, घृणा, संकट, भावनात्मक ब्लैकमेलिंग और महिलाओं से खराब व्यवहार से पीड़ित है ?

सनातन संस्कृति के प्रति विद्वेषपूर्ण घृणा को संबोधित किया जाना चाहिए और इस महान संस्कृति को बदनाम करने के किसी भी प्रयास का एकजुट रूप से विरोध किया जाना चाहिए। अविश्वासियों को अपने एजेंडे को अलग रखना चाहिए और समाज में अच्छा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो प्यार, देखभाल और अपनेपन के माहौल को बढ़ावा देगा, अंततः खुशी की ओर ले जाएगा, जो हर किसी का अंतिम लक्ष्य है। आइए हम रिश्ते को तोड़ने के बजाय उसे मजबूत करने और समाज को और भी प्यार और अपनेपन से जोड़ने का काम करें।

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

7875212161